1

# कर्तव्य और दायित्व शब्दों से आप क्या समझते हैं?

**कर्तव्य :-** कर्तव्य वह कार्य या नैतिक जिम्मेदारी है जिसे हमें स्वेच्छा से या समाज, धर्म, कानून, या नैतिकता के अनुसार निभाना चाहिए। यह हमारे व्यवहार और कार्यों से जुड़ा होता है।

**दायित्व :-** दायित्व वह बाध्यता या उत्तरदायित्व है जो किसी विशेष भूमिका पद, कानून या सामाजिक स्थि[ति] के कारण हमारे ऊपर आती है। जिसे हमें निभाना ही पड़ता है, चाहे स्वेच्छा से हो या न हो।

दर्शनशास्त्र के अनुसार कर्तव्य और दा[यित्व] सापेक्ष है। कर्तव्य अर्थात् वैसा क[र्म] जो करना चाहिए, जो मनुष्य के नैतिकता जीवन का तत्व है। मनुष्य को क्या करना चाहिए इसी का ज्ञान ही नैतिक ज्ञान का सार है। कर्तव्य मनुष्य के विवेक और वासना के द्वन्द्व का संकेत करता है। यदि द्वन्द्व नहीं होता और जैसा चाहिए वैसा ही कर्म मनुष्य करता तो फि[र] कर्तव्य की आवश्यकता ही नहीं होती। विवेक और वासना में द्वन्द्व होने

कारण ही है दोनों, व्यक्ति को अपनी ओर खींचते है। इनमें वह जो नैतिक नियम के अनुसार है, उचित है और ऐसे ही कर्मों की बाध्यता व्यक्ति महसूस करता है। यही उसका कर्तव्य है और दूसरे शब्दों में, वैसे कर्म जिनकी संगति नैतिक आदर्श से ही है उसके कर्तव्य है और वह उन्हें करने के लिए बाध्य होता है। अतः जो उचित है, वही कर्तव्य है। यह नैतिक बाध्यता क्यों और कैसे है। इसके सम्बन्ध में विविध मत है। कर्तव्य एक प्रकार का नैतिक ऋण है, जो मनुष्य को चुकाना चाहिए।

कुछ विचारकों का मत है कि कर्तव्य का दायित्व बाह्य है, अर्थात् किसी बाह्य शक्ति के भय से ही कर्मों की प्रेरणा मिलती है। पर यह मत अमान्य है। कर्तव्य के साथ ही दायित्व लगा रहता है। जब हम जान जाते हैं कि यही कर्तव्य है तो, ऐसी ऐसा ही करना चाहिए, की भावना तो उसी में छुपी हुई रहती है। इसी भावना को दायित्व कहा जाता है।